Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN (Online): 3048-6513
Volume: 3 Issue: 3 || February 2026 (Special Issue 1) || DOI: 10.5281/zenodo.18850506

समकालीन हिंदी गज़ल के परिप्रेक्ष्य में आम मनुष्य का यथार्थ

प्राचार्य प्रो. रजनी शिखरे[1] & **डॉ. मनोजकुमार ठोसर**[2]

समकालीन गजलकारों ने आर्थिक दृष्टियों से अपने समान एवं देश को देखा, परना और अनुभूति को यथार्थ रूप में विवित किया और अर्थ पतन से बचाने के लिए एक प्रयास किया है। जो समय की आवश्यकता भी है। भारत देश दुनिया की सातवीं बड़ी अर्थव्यवस्था है परंतु आर्थिक विषमता और गरीबी भी हमारे देश में सर्वाधिक है। क्योंकि देश की आबादी भी बहुत है। हमारे राजनीति में चल रहे भ्रष्टाचारों के कारण आर्थिक योजनाओं का फायदा आम आदमी को नहीं हो रहा और उसी के कारण देश में भूख, गरीबी, बेरोजगारी, मजदूरी, आर्थिक विषमता, मूलभूत जरूरतों की आपूर्ति आदि समस्याएँ निर्माण हो गई है। इन समस्याओं को उजागर करते हुए समकालीन गृजलकारों ने व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र आदि प्रत्येक की समस्याओं को हमारे सामने रखने का प्रयास किया है।

'सर्वजनहिताय एवं सर्वजनसुखाय' की राजनीति करनेवाले समाजसेवक आज स्वांतसुखाय की राजनीति कर रहे हैं। जिसके फलस्वरूप समस्याओं का स्वरूप वहीं है। उसमें कमी नहीं वार्धक्य दिखाई दे रहा है। देश में आर्थिक विषमता इतनी बढ़ा है कि चीन और भारत दुनिया के सबसे बड़े दो देश है। एक ओर पाँच सितारों की जिंदगी और दूसरी ओर फुटपाथ भी नसीब न होना। इस विषमता को समाप्त करना जरूरी है। तो ही हम सही मायने में स्वतंत्र एवं प्रजासत्ताक है।

भूख और बेरोजगारी की समस्याओं ने भी हमें परेशान किया है। हम कहने को तो कहते है कि भारत हमारा कृषिप्रधान देश है और कुपोषण एवं भूखमरी से मरनेवाले लोगों की तादात सबसे अधिक कर्ता है? इन सवालों को समकालीन गजलकारों ने अपने गज़लों में अभिव्यक्त किया है। जिससे हमें विभित्र बातों से परिचित किया गया है।

महंगाई, बाजारवाद और पूँजीवाद के कारण समाज में एक नई समस्या निर्माण हो गई है। भूमंडलीकरण और बाजारवाद ने मनुष्य को केवल खरीददार बना रखा है। हम सुबह से लेकर रात तक क्या करें और क्या न करे? क्या खाए, कहाँ जाये, किस क्षेत्र में काम करें? इन सभी बातों पर विज्ञापन एवं बाजार का प्रभाव दिखाई देता है। जिसमें आपकी पूँजी को हड़पने की कला इन विज्ञापनों ने अच्छी तरह से सीख ली है। मध्यवर्गीय समाज को इन्होंने खोखला बना दिया। इन बातों में समकालीन राजलकार अपरिचित नहीं रह सकते। उन्होंने उपर्युक्त सभी प्रकार की समस्याओं को अपने गृहलों में विभित्र दृष्टिकोनों में बलुची अभिव्यक्त किया है। अतः हम इस अध्याय में समकालीन हिंदी गजल में आये आर्थिक संदों का आगमन करेंगे।

अपने देश में गरीबी एक बहुत बड़ी समस्या बन गई है। गरीबी की मात्रा बढ़ने के विभिन्न कारण है परंतु राजनीति इसे अधिक समय तक बनाये रखना चाहती है क्योंकि यह उनकी समस्या है। समाज अगर अपनी जरूरतें पूरी करें तो उनके खिलाफ जा सकता है परंतु राजनीतिक लोग इससे बहुत परिचित है।

[1] र. भ. अट्टल महविद्यालय गेवराई
[2] हिंदी विभाग, र. भ. अट्टल महविद्यालय गेवराई

हिंदी गजल के परम्परा पुरुष गजलकार दुष्यंतकुमार गरीबी से लड़न्त एवं संवर्ष करना चाहते है। वे गरीबी को व्यक्त करते है परंतु उससे भागते नहीं है। वे कहते है कि हमारे पास कमीज न हो ता पाँवों से पेट बैंक लेंगे। परंतु इस सफर को आगे बढ़ाएंगे क्योंकि ये लोग बड़े ही मुनासिब है। जो लोग पूरी तरह से उजड़कर भी ऊफ नहीं करते वे कितने गरीव है। अमीर लोग जो है कि वे ली. को छूने भी नहीं परंतु हमेशा चिल्लाते राहते है। दुष्यंतकुमार गरीबी को अभिव्यक्त करते हुए आर्थिक विषमता को उजागर करते है। उनके आर से यह स्पष्ट हो जाता है।

"न हो कमीज तो पाँचों से पेट बैंक लेंगे
ये लोग कितने मुनासिब है इस सफर के लिए।"[1]
अन्याय होने पर चुप रहनेवाले लोग दुष्यंतकुमार को बहुत गरीब लगते हैं।
"आपने लौ छूई नहीं आप कैसे अदीब है
ऊफ नहीं की उजड़ गए, लोग सचमुच गरीब है।[2]

गजलकार डॉ उर्मिलेश प्रगतिशील गजलकार के रूप में पहचाने जाते है गरीबीको बनाया रखने की साजिश, व्यवस्था का षडयंत्र और राजनीति की भ्रष्ट प्रकृतीका हाथ है यह स्पष्ट करते हैं। उद्योजक एवं राजनीतिवालों की साठ-गांठ की थी पोल खोलनका प्रयास उन्होंने किया है। सभी बुर्गीचों पर बैठे हुए लोगों की समस्या बनकर लोग मुश्किल हो सकती है। इसीलिए समाज को गरीबी में ही रहने दो और शिक्षा से दूर रखो। ताकि ये बगावत ना का दे। इस तरह की व्यवस्था देश में मौजूद है। उसको गजलकार उजागर कर देते है।

"गरीबों के ये बच्चे है बड़े जाहिल बनेंगे ये
अगर कुछ पड़ गये तो आपकी मुश्किल बनेंगे ये।"[3]

गजलकार जहीर कुरैशी ने गरीबी में जीनेवाले लोगों की स्थिती को एवं समस्याओं को गजलों में रखा है। देश में गरीबी में जीनेवाले बहुत सारे लोग है। जो केवल अपने पेट की भूख मिटाने की पहल में जन्म से मृत्यू तक सफल नहीं होते। वे केवल रोटी की समस्याओं को अंत तक खत्म करने का प्रयास करते रहते हैं। गजलकार कहते है कि दी रोटी के अलावा चार की बातें न करनेवाले करोड़ों लोग कोठी और कार की बातें नहीं करते। परंतु उन्हीं के बलबूते पर गिने-चुने लोग ऐशो-आराम करते है। इस विषमता और गरीबी के कारण गजलकार बगावत का प्रयास करते हैं।

"दो रोटी के अलाबा चार की बातें नहीं करते
करोड़ों लोग कोठी कार की बातें नहीं करते।"[4]

"जहीर कुरैशी ने आम आदमी की पीड़ा का चित्रण अत्यन्त प्रभावी ढंग से किया है। आम आदमी पीड़ाओं से, दुख, दर्द से, अपनी समस्याओं से घिरा हुआ है। उसका जीवन यातनामय बना हुआ है। किन्तु, उसकी समस्याएँ इतनी भी बड़ी नहीं है कि उनकी पूर्ति न हो सके। वह तो केवल रोटी, कपड़ा और मकान की अपेक्षा करता है"।[5] इस प्रकार जहीर कुरैशी प्रगतिशील एवं प्रतिबद्ध गजलकार के समान आम आदमी की समस्याओं की चिंता करते है।

गजलकार राजेश रेड्डी आम आदमी की अर्थाभाव के कारण उभरनेवाली समस्याओं के माध्यम से गरीबी को अपने गज़लों में अभिव्यक्त करते है। दिन भर मेहनत करके शाम को घर जाते समय गरीब व्यक्ति अपने बच्चों को कुछ ले जाने के लिए मन को मारता है। क्योंकि शाम को खाली हाथ घर जाने पर बच्चों की हसी देखकर वह मत ही मन मर-सा जाता है। यह दुख रेड्डी अपने गजलों से अभिव्यक्त करते है।

"शाम को जिस वक्त खाली हाथ घर जाता हूँ मैं
मुस्कुरा देते हैं बच्चे और मर जाता हूँ मैं।"[6]

आम आदमी अपनी अभावों को पूरा करने का प्रयास करता रहता है परंतु उम्र भर जुटाने और जोड़ने के चक्कर में वह स्वयं ही घट जाता है। मेले में खिलौनों की दुकानों से बंचकर वह अपने बच्चों को इधर-उधर घुमाता है। गरीबी एवं अर्माभाव के कारण आम मनुष्य को कितनी समस्याओं को सामना करना पड़ता है। और उसके मन की क्या अवस्था होती होगी यह केवल कवि ही अभिव्यक्त कर सकता है। राजेश रेड्डी की " गज़लों में ऐसे दुखी इंसानों की कराह सुनाई देती है जिसे अपने कुछ खो जाने की गम सदा सलता रहता है। राजेश फनकारी में उलझने की बजाय, अपने महसुसात में उसे शरीक करने के काइल हैं।"[7]

"कुछ उम्र जुटाने में तो कुछ जोड़ने गुजरी बढ़ते हुए संसार में घटता ही गया मैं।
मेले में थी जिस सिम्त खिलौनों की दुकानें अस सिम्त से बच्चों को बचाता ही गया मैं।"[8]

गजलकार अशोक 'अंजुम' अर्माभाव के कारण निर्मित समस्याओं को उजागर करते है। दहेज प्रथा, शादी, गहने, महावर आदि बातें गरीब की लड़की को नश्तर सी लगती है यह बात कहते है। घर गिरवी रखना, चेहरों पर पड़ी झुर्रियां, चूख, रोटी आदि समस्याओं को हल करते हुए मनुष्य मर जाता है। इसके पीछे क्या कारण है यह मत पुछिये। गजलकार इसका जवाब पाठकों को ढूंढ़ने के लिए छोड़ देते है। क्योंकि आम आदमी की सवालों को जवाब ढूँढगे तो बहुत सारे लोगों को मद्द उनके साथ हम भी करे। यह आशा अशोक जी करते हैं।

"उस गरीब की बिटियों को नश्तर सी लगती है
हल्दी, बिछुए और महावर, कंगन की बाते।"[9]
गरीबी और इससे निर्मित विभिन्न समस्याओं को उजागर करता हुये दो शेर देखिये
"क्यों रखा गिरवी मका, मत पूछिये
पड़ गयी क्यों झुर्रियां, मत पूछिये।
खोजने निकला जो रोटी दाल को
खो गया है वह कहीं, मत पूछिये।"[10]

इस प्रकार अशोक अंजुम आम आदमी की समस्याओं को व्यक्त करते हु मेहनत और मजबूरी, परेशानियाँ, मानसिक स्थिति आदि बातों को उजागर करते हैं।

गजलकार माधव कौशिक गरीबी को गहराई में अभिव्यक्त करते हैं। गरीबी के कारण अपने बच्चों को एक गुल्लक भी खरीदकर न दे सकनेवाले आदमी का दुख और भूख, बेकारी एवं जहालत की समस्याओं में बेजार मनुष्य का दुख उनकी गुजलों में मिलता है। सुबह से शाम तक केवल पेट की समस्या से झुझनेवाले गरीबों को बरकत कहाँ से नजर आएगी। क्या आटा-नून के लिए कि जानेवाली भागदौड़ कभी खत्म हो जाएगी? जिनके पाम दो समय की रोटी उपलब्ध नहीं है। उनकी भागदौड़ उनके मृत्यु के बाद ही समाप्त होनेवाली है। इस तरहमाधव कौशिक जी गरीबी एवं उसके दुःख को अभिव्यक्त करते है। यह उनके शेर से अधिक मष्टजागा है।

"भूख बेकारी जहालत इस कदर
बालकों के पास भी गुल्लक नहीं।"[11]

नेट की समस्या से ग्रस्त मनुष्य के जीवन में कुछ उपलब्धि नहीं है-

"सुबह से शाम तलक है पेट का मसला
हमारे हाथ में बरकत नजर नहीं आती।"[12]

अन्न के लिए जीवन की भागदौड़ यहाँ प्रस्तुत की है-

"खत्म हो सकती है. कैसे दौड़ आटा-नून की
जब मयस्सर ही नहीं है रोटियों दो-जून की।"[13]

माधव कौशिक की" गृज़लों का पात्र समाज का वह निरिह प्राणी है, जिसकी आवाज बेअसर और बहुत ज्यादा दुर्बल है। एक तरह से गजलकार माधव कौशिक का स्वर, समाज के हताश और टूटे-बिखरे मनुष्य की ही आवाज है।"[14] जिसके माध्यम से वे एक बगावत का काफिला बनाने के प्रयास करते हैं।

गजलकार कुँअर बेचैन कहते है गरीबी के कारण पेट की समस्या से लड़नेवाले आम आदमी को अपना पेट मदारी के समान लगता है और वह लोगों की ऊँगलियों पर नाचता है। यह व्यवस्था, अमीर लोग, सरकार, उन्हें नचाती भी है। हमारे देश में बहुत सारे ऐसे परिवार है जो त्योहार भी नहीं मनाते। उनकी अर्थाभाव की समस्या आज भी वहीं ज्यों की त्यों है। जिन्हें रोशनी तो दूर खाने के लिए भी कुछ प्राप्त नहीं होता। इस बात को कुँअर बेचैन बखुबी व्यक्त करते हैं।

"हमको नचा रहा है इशारों पे हर घड़ी
शायद हमारा पेट मदारी की तरह है।"[15]

त्योहार न मना सकनेवाले गरिबों की विवशता इस शेर में उजागर हुई है-

"मुद्दतों से उसके घर में दिवाली मनी नहीं
हाँ उनमें आर्त तो है मगर रोशनी नहीं।"[16]

"डॉ. कुँअर बेचैन ने समाज की दोहरी आर्थिक नीति तथा उसके खोखलेपन का यथार्थ चित्रण अपनी गज़लों में किया है। साथ ही पूँजीपतियों के दोनों चेहरे को बेनकाब किया है।"[17] इसी निराशा और पीड़ा को डॉ. कुंअर बेचैन ने अपनी गज़लों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है। आम आदमी महाजन के व्याज से बेबम, अमीरों का तकिया, पूँजीपतियों का दाग है किमको बेचैन ने 'रामफल के रूप में व्यका किया है।

"मारा है जिसको रोज महाजन के व्याज ने
बेबस से एक गरीब का रुपिया है रामफल।
जिसकी दवा के सो रहे है. सर बड़े-बड़े
महलों के खानदान का तकिया है रामपाल"[18]

गजलकार मेन विराट गरीबी के कारण आनेवाली समस्या, नित अभाव, भूख और कपड़ों का अभाव, मजदूरी, बेरोजगारी आदि को अपने गुजलों में समेटते हुए व्यवस्था एवं शोषण का विरोध करते हैं। अमीरों को गरीबों के अभाव, उदासी, भूख, बेरोजगारी, बिगारियों से कुछ भी फरक नहीं पड़ता। भारत स्वतंत्रता के पैसट साल बाद आज भी अधपेट, अधनंगे,

दरिद्री लोग बिना किसी विवाद के अपने मृत्यु की बाट जोहते हैं। उनकी पीड़ा को चंद्रसेन विराट जी वाणी देने का प्रयास करते हैं। लोकतंत्र और राजनीति के नाम पर आम जनता को क्या मिला है यह सवाल हमारे सामने पेश करते हुए हमें कुछ करने की सलाह विराटजी देने है।

"तुम्हें तो एक ही मौसम अभावों का उदासी का
भले हो ईद, दीवाली, हमे क्या फर्क पड़ता है।"[19]
गरीबी से विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त मनुष्य की विवशता और मजबूरी का शेर देखिये
"आज भी अधपेट, अधनंगा, दरिद्री है बहुत
पर न करता बाद, हम उस निर्वाचन सेनाक।"[20]

चंद्रसेन विराट की गजलों के प्रति विचार व्यक्त करते है कि, "विराट की गज़लों की विषयवस्तु समसामायिक जीवनबोध को आज की भाषा में वाणी देती है। आज के जीवन की जो समस्याएँ है आम आदमी के सामने जो चुनौती की भरी त्रासदी है। निराशा, जड़ता, तनाव और कुंठाओं का जो अंधेरा है, विराट ने उस अंधेरे का भी चित्रण किया है और वह अंधेरा एक दिन अवश्य टूटेगा, इस तरह की आश्वासन वाणी भी देने का प्रयास किया है "[21] इस तरह विराट जी प्रगतिशील, प्रतिबद्ध एवं आम आदमी के दुःख एवं पीड़ा को वाणी देनेवाले सशक्त गजलकार है। और आम आदमी के हौसले बुलंद करते हुए आशाओं को पल्लवित करनेवाले गजलकार है।

गजलकार ज्ञानप्रकाश विवेक अर्थाभाव में आम आदमी की मनोवैज्ञानिकता किस प्रकार की होती है उसको बहुत ही सटीक रूप में एवं यथार्थता के साथ व्यक्त करते हैं। विवेक जी नकर में गरीब आदमी अपने चप्पलों के प्रति कितना सजग होता है यह स्पष्ट करते है जि चायत सफर में देब थी जो आम आदमी अपने जेब में रखता था। गरीची के कारण परेक और पुराने कुते डोने के कारण कोई गरीब बारात में शामिल नहीं होता। तब उसके गन की विली किस प्रकार की हो सकती है। साथ ही कोई पिता बच्चों को खिलौने खरीद पाने के कारण अगर मेले में नहीं ले जाता तो तब उसके मन की स्थिती किस प्रकार हो सकती है? यह वहीं गरीब समझ सकता है जिसके पास पैसे नहीं और वह इन समस्याओं से गुजरा हो। विवेकजी की यही क्षमता उन्हें हिंदी के गज़लकारों में शीर्षस्थान पर लेकर जाती है।

"उठा के जेब में रखता था चप्पले अपनी
बस एक ऐब यही मेरे हमसफर में था।"[22]

गरीबों के जीवन में मजबूरी देखिए-

"मैं इसलिए नहीं बारात में हुआ शामिल
फटी कमीज है, जुते भी कुछ पुराने है।"[23]

मजबूर पिता और गरीबी की विवशता में मनुष्य की स्थिति यहाँ उजागर हुई है-

"इसीलिए ले नहीं जाता मुझे मेले में पिता
देख लूँगा मैं खिलौने तो मचल जाऊँगा।[24]

गजलकार सुल्तान अहमद ने अभाव, गरीबी, गरीबों का समाज में स्थान, गरीबों का अनादर, उनका अकेलापन लोगों को इन्कार की नजर आदि समस्याओं के साथ ही भूख, बेरोजगारी, बीमारी, मूलभूत जरूरतों की अपूर्णता, महंगाई आदि

समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। उनकी गजलों में आर्थिक विषमता, व्यवस्था विरोध, शोषण, यह समस्या अधिक रूप में उजागर हुई है। सुल्तान अहमद स्वयं उपर्युक्त समस्याओं से स्वपरिचित है। जिससे उनके गृहतों में कहीं कृत्रिमता नहीं झलकती।

"अभावों में भीतर तलक भर गया हूँ
उठाया गया हूँ मैं जीस घर गया हूँ।
मिला जो भी मुझसे निगाहे बचाकर
न जाने क्या ऐसा गुनाह कर गया हूँ।[25]

गजलकार अदम गोंडीवी गरीबों के लिए राजनीति, समाज एवं व्यवस्था का विरोध लेकर है। उन्होंने आम आदमी, दलित, पीडित, स्त्री, समाज के सभी दुखी एवं अभागे मनुष्य को अपना विषय-वस्तु बनाया है। उनके एक शेर में घर के अभाव में फुटपाथ पर जीवन व्यतित करनेवालों की पीड़ा को मुखर किया है। बेबसी में गरीब ऐसी जिंदगी जीने पर मजबूर है। यह भी वे स्पष्ट करते हैं।

"कितने बेबस है ये फुटपाथ पर सोनेवाले

गो परिन्दों को भी घर की तलाश होती है।"[26]

समकालीन गजलकारों ने गरीबी को अपने गज़लों में चित्रित करते हुए उनके विभिन्न समस्याओं को उजागर किया है। गरीबों की बेबसी, शिक्षा से वंचित, रोटी के लिए भाग-दौड़, मानसिक घुटन, अभावों का जीवन, दहेज के कारण आनेवाली समस्याएँ झुर्रियों से चेहरे, मजदूरी, बीमारियों, बेकारी, पेट के कारण नाचना, जिस्म का बेचना, महाजनों का ब्याज, अमीरों का तकिया, पूँजीपतियो का दास, अधपेट, अधनंगे, बेघर, दरिद्री जीवन अर्थाभाव के कारण बारात और मेले में अनादर आदि समस्याओं को गजलकारों ने व्यक्त करते हुए मरीजों के दुःख को अपनी पीड़ा के समान व्यक्त करते हुए समाज को उनसे परिचित कराने का सफल प्रयास किया है।

संदर्भ सूची

1) साये में धूप, दुष्यंतकुमार, पृ.क्र.13
2) वही, पृ.क्र.37
3) डॉ. उर्मिलेश की गज़ले, सं. नित्यानंद तुषार, पृ.क्र. 36
4) जहीर कुरैशी की चुनिंदा गज़ले, सं. मधु खराटे, पृ.क्र. 118
5) हिन्दी गज़ल के नवरत्न, डॉ. मधु खराटे, पृ.क्र. 51
6) अनहद, राजेश रेड्डी, पृ.क्र. 18
7) हिंदी गज़ल की विकास यात्रा, ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ.क्र. 182
8) अनहद, राजेश रेड्डी, पृ.क्र. 67
9) अशोक अंजुम की प्रतिनिधि गज़ले, अशोक अंजुम, पृ. क्र. 112
10) वहीं, पृ.क्र. 158
11) सूरज के उगने तक, माधव कौशिक, पृ.क्र. 14

12) वही, पृ.क्र. 71

13) वही, पृ.क्र. 78

14) माधव कौशिक का रचनासंसार, सुरेन्द्रकुमार, पृ.क्र. 61

15) आंधियों धीरे चलो, कुँअर बेचैन, पृ.क्र. 94

16) वही, पृ.क्र. 84

17) कुँअर बेचैन की गज़लों का चिंतनपक्ष, रघुनाथ कश्यप, पृ.क्र. 154

18) (18) ऑधियों धीरे चलो, कुँअर बेचैन, पृ.क्र. 111

19) चंद्रसेन विराट की प्रतिनिधि ग़ज़लें, सं. डॉ. मधु खराटे, पृ.क्र. 68

20) वहीं, पृ.क्र. 166

21) विराट विमर्श, डॉ. अनन्त राम मिश्र, पृ.क्र. 157

22) गुफ्तगू अवाम् से है, ज्ञानप्रकाश विवेक, पृ.क्र. 13.

23) (23) वही, पृ.क्र. 16

24) 24) वहीं, पृ.क्र. 22

25) 25) खामोशियों में बन्द ज्वालामुखी, सुल्तान अहमद, पृ.क्र.65

26) 26) समय से मुठभेड, अदम गोंडवी, पृ.क्र. 74

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are solely those of the author(s) and do not necessarily reflect those of the publisher, editors, or the editorial board.*